B.A. Semester - II (Social Psychology)
MJC Semester - II, Unit - 2, (Session 2024-28)

समाज एवं व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण का स्वरूप
(Nature of Social and Person Perception)

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की प्रमुख व्याख्या रीकोर्ड और बैकमैन की है। इन दोनों के मतानुसार, "व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण उस प्रक्रिया पर केन्द्रित है जिसके द्वारा दूसरे व्यक्तियों के सम्बन्ध में धारणाएँ, मत या अनुभूतियाँ बनती है।" व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की इस परिभाषा से यह स्पष्ट है कि व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण व्यक्ति की संवेदनात्मक अनुभूति तथा अन्य व्यक्तियों से प्राप्त सूचनाओं पर निर्भर होता है।

(1) प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की स्वानुभूति की योग्यता :—
→ प्रत्यक्षीकरण की प्रक्रिया में सर्वप्रथम दूसरे व्यक्ति के प्रभाव का निर्माण होता है। उदाहरण के लिए :- सामान्यतः हम अपने दैनिक जीवन में यह देखते हैं कि यदि कोई व्यक्ति हमसे पहली बार मिलती है तो उस समय उस व्यक्ति के विषय में हम कुछ भी जानते ही नहीं या बहुत कम जानते हैं। जब उस व्यक्ति से हमारा परिचय होता है तो उसके साथ हमारी सीमित अनुक्रिया तथा पारस्परिक प्रक्रिया होती है अर्थात् परिचय के माध्यम से हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर ही हमें उस व्यक्ति के व्यक्तित्व की थोड़ी-सी जानकारी प्राप्त होती है, जिसके आधार पर ही हम उस व्यक्ति के व्यक्तित्व तथा व्यवहार की धारणाएँ बना लेते हैं।

(2) प्रत्यक्षीकरण में निरीक्षण की योग्यता :→ निरीक्षण करने की योग्यता व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण की दूसरी विशेषता है। निरीक्षण की योग्यता के आधार पर ही प्रत्यक्षीकरण कर्त्ताओं दूसरे व्यक्ति की अन्तःक्रिया के सम्बन्ध में अनुमान लगाता है। प्रत्यक्षीकरण की इस योग्यता को चरित्र पढ़ने की योग्यता भी कहा जाता है।

प्रत्यक्षीकरण के विषय में Allport का यह मानना है कि प्रत्येक व्यक्ति में अन्य व्यक्ति के गुणों के सम्बन्ध में निर्णय लेने की क्षमता होती है, परन्तु यह योग्यता भिन्न-भिन्न व्यक्तियों में भिन्न होती है।

व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण में प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की विशेषताओं की भूमिका (Role of Perceiver's Characteristics in Person Perception) :→ व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण में एक व्यक्ति किसी अन्य ~~किसी~~ व्यक्ति की विशेषताओं तथा उससे सम्बन्धित सूचनाओं के आधार पर अपना निर्णय लेता है। इसका तात्पर्य यह है कि प्रत्यक्षीकरण पूर्णतः दूसरे व्यक्ति पर ही निर्भर नहीं होता है बल्कि उस निर्णय में प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की अपनी विशेषताओं का भी बहुत अधिक प्रभाव होता है। इस तरह प्रत्यक्षीकरण में प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं।—

(1) प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की आयु (Age of Perceiver) :—
→ प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की आयु के विषय में अध्ययन के पश्चात् यह पाया गया कि प्रत्यक्षीकरण कर्त्ता की आयु जितनी अन्य व्यक्ति

Scanned with OKEN Scanner

से कम होगी व्यक्ति प्रत्यक्षीकरण के मूल्यांकन में उतना ही अन्तर होगा।

(2) मूर्तता एवं अमूर्तता (Concreteness and Abstractness)

→ मूर्तता एवं अमूर्तता के विषय में अध्ययन के पश्चात् यह ज्ञात हुआ है कि जिस व्यक्ति में अमूर्तता की जितनी अधिक मात्रा होती है अर्थात् जो व्यक्ति जितना अधिक पढ़ा-लिखा होता है वह व्यक्ति उतने ही उचित ढंग से प्रत्यक्षीकरण के गुणों को संगठित कर लेता है और जिस व्यक्ति में मूर्तता की योग्यता होती है वह व्यक्ति किसी निर्णय को लेते समय साक्ष्यों पर अधिक विश्वास करते हैं इसलिए वे अच्छे-बुरे, उचित-अनुचित जैसे आयामों पर जल्दी ही निर्णय ले लेते हैं।

(3) प्रत्यक्षीकरण का व्यक्तित्व (Personality of Perceiver)

→ इस विषय में सीडल फ्रीमैन और लिपेट ने मिलकर एक अध्ययन किया जिसके माध्यम से यह ज्ञात हुआ है कि जिन प्रत्यक्षीकरणकर्ताओं का व्यक्तित्व तानाशाह प्रकार का होता है तो वह जो प्रत्यक्षीकरण करता है वह अपेक्षाकृत अधिक शुद्ध होता है। इसी प्रकार शैनिनाविल्स तथा क्रीकेर के द्वारा किये गये अध्ययनों के आधार पर यह पाया गया कि तानाशाह प्रकृति का प्रत्यक्षीकरणकर्ता प्रत्यक्षीकृत व्यक्ति को अपने ही समान समझता है।

(4) अन्तर्निहित व्यक्तित्व (Implicit Personality)

→ प्रत्यक्षीकरणकर्ता की निजी विचारधारा पर आधारित पक्षपात का सम्बन्ध अन्तर्निहित व्यक्तित्व से है। इस संदर्भ में जो अध्ययन किये गये उनमें यह देखा गया कि प्रत्यक्षीकरण कर्ता के द्वारा जिस व्यक्ति का प्रत्यक्षीकरण किया जाता है उसके सम्बन्ध में उसकी पक्षपातपूर्ण निजी विचारधारा होती है जो प्रत्यक्षीकरण को बहुत अधिक प्रभावित करती है। इस संदर्भ में ग्रॉस ने कॉलेज की छात्र-छात्राओं के सम्बन्ध में जो अध्ययन किए हैं उसमें उन्होंने अनेक प्रत्यक्षीकरण पर अन्तर्निहित व्यक्तित्व का प्रभाव पाया।

(5) लिंग का प्रभाव (Influence of Sex) :-

प्रत्यक्षीकरण पर प्रत्यक्षीकरणकर्ता के लिंग की विशेषता का भी बहुत अधिक योगदान होता है। इस विषय में जो अध्ययन किये गये उससे यह ज्ञात होता है कि पुरुषों की अपेक्षा महिलाएँ अधिक रूढ़िवादी मूल्यांकन करती हैं।

→

दुरुपयोग करने का सामर्थ्य प्राप्त कर लेता है जिसके कारण उस व्यक्ति में समान द्वारा अस्वीकृत कर दिये जाने की आशंका उत्पन्न हो जाती है।

व्यक्ति की कई भावनाएँ, सांवेगिक अनुभव तथा विचार ऐसे होते हैं जो अंतरंग होने के बाद भी अभिव्यक्त हो जाते हैं। दूसरे लोगों के साथ अंतरंग भावनाओं तथा सूचनाओं का आदान-प्रदान ही आत्म-अनावरण कहलाता है। उलेंगा तथा ग्रजलेक (1974) के अनुसार आत्म-अनावरण आवश्यक होता है। इससे अनेक उद्देश्यों की पूर्ति होती है। इसके निम्न पाँच उद्देश्य प्रमुख हैं।

(1) आत्म-स्पष्टीकरण (Self Clarification) :- जब दो व्यक्ति आपस में एक दूसरे से अपनी अंतरंग समस्याओं, भावनाओं तथा विचारों का आदान-प्रदान करते हैं तो ऐसी स्थिति में दो प्रकार के लाभ प्राप्त होते हैं। आपस में एक-दूसरे की समझ अत्यधिक गहरी हो जाती है तथा अपने बारे में भी अधिक स्पष्टता या जानकारी प्राप्त हो जाती है।

(2) सामाजिक वैधीकरण (Social Validation) :- जब एक व्यक्ति किसी दूसरे व्यक्ति के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत करता है तो दूसरा व्यक्ति उस व्यक्ति के विचारों के प्रति अपनी प्रतिक्रिया प्रस्तुत करता है। उस प्रतिक्रिया के आधार पर व्यक्ति बहुत हद तक यह निर्धारित कर सकता है कि उसके विचार सामाजिक दृष्टि से उचित हैं या नहीं।

(3) आत्म अभिव्यक्ति (Self Expression) :- आत्म-अभिव्यक्ति अभिव्यक्ति से तात्पर्य ऐसे सांवेगिक अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के समक्ष प्रस्तुत करने से है जो उसे दुःख एवं तनाव की स्थिति प्रदान करते हैं तथा मन को बेचैन कर देते हैं। ऐसे अनुभवों को दूसरे व्यक्ति के सामने व्यक्त करने से मन हल्का तथा स्वच्छ हो जाता है।

(4) सामाजिक नियंत्रण (Social Control) :- अन्तःक्रिया जगत में नियंत्रण रखने के उद्देश्य से व्यक्ति अपने अंतरंग विचारों विचारों तथा अनुभवों को छिपाये रखता है तथा सिर्फ ऐसे विचारों तथा अभिवृत्तियों को विस्तृत रूप से व्यक्त करता है जिसके फलस्वरूप समाज में उपस्थित व्यक्तियों की नजरों में उसकी छवि और अधिक आकर्षक बने।

(5) सम्बन्ध विकास (Relationship Development) :- दूसरे के साथ व्यक्तिगत सम्बन्ध का प्रारंभ करने तथा उसे अंतरंग बनाने के लिए व्यक्तिगत सूचनाओं एवं निजी विचारों को प्रकट करना एक अत्यन्त महत्वपूर्ण तरीका है। प्रेम सम्बन्ध में व्यक्ति अपने जीवनवृत्त के आदान-प्रदान से प्रारंभ कर सामान्य अभिरुचियों अभिवृत्तियों एवं कामनाओं की जानकारी प्राप्त करता है।

आत्म-अनावरण अंतरंग स्थापित करने की एक महत्वपूर्ण पद्धति है। ऐसा करने में अंतरंगता में वृद्धि होती है। कभी-कभी ऐसे अनावरण में अनेक प्रकार के संकट उत्पन्न होने की सम्भावना बढ़ जाती है। लेवेरिंगर उलेंगा (1984) ने बताया कि आत्म-अनावरण से अनेक प्रकार के सामाजिक संकट उत्पन्न होते हैं। इस प्रकार इसके द्वारा चार प्रकार के संकट प्रमुख हैं:

(1) नियंत्रण की हानि (Loss of Control):– अंतरंग के सम्बन्ध में व्यक्ति अपनी बहुत सी कमजोरी अपने मित्र को बता देता है, जिसका दुरुपयोग करके उसका मित्र उसे हानि पहुँचाता है तथा उस पर वह अपनी प्रभाविता स्थापित कर उसे अपने नियंत्रण में रखता है जबकि अनावृत करने वाला व्यक्ति दूसरे पर अपना नियंत्रण खो देता है।

(2) अनिच्छा (Indifference):– किसी दूसरे व्यक्ति के साथ सम्बन्ध स्थापित करने के लिए कोई व्यक्ति वैयक्तिक सूचनाओं का सर्वप्रथम आदान-प्रदान करता है। कभी-2 दूसरा व्यक्ति अन्योन्यता की प्रतिक्रिया करता है तथा एक-दूसरे से अंतरंगता विकसित होती है। कभी-कभी दूसरा व्यक्ति किसी की निजी सूचनाओं की जानकारी प्राप्त करने के बाद सम्बन्ध स्थापित करने में अनिच्छा प्रदर्शित कर सकता है, क्योंकि अनावृत्त सूचना को व्यक्ति का अशोभनीय गुणधर्म माना जाता है।

(3) विश्वासघात (Betrayal):– व्यक्ति कभी-2 अपने मित्रों को अपने से सम्बन्धित गोपनीय सूचनाएँ बता देता है तथा उस पर पूर्ण विश्वास रखता है कि उसका मित्र उसके द्वारा दी गयी सूचना को किसी अन्य व्यक्ति को नहीं बतायेगा। ऐसी स्थिति में कभी कोई मित्र उसके साथ विश्वासघात करते हुए सूचना किसी अन्य व्यक्ति को बता सकता है।

(4) अस्वीकृत (Non-acceptance):– व्यक्ति के निजी जीवन से सम्बन्धित सूचनाओं की जानकारी से सम्भव है कि लोग उसे अस्वीकार कर दें।

Scanned with OKEN Scanner